आरती श्री सीता जी की

आरती जनक दुलारी की ।
सीता जी रघुवर प्यारी की ।। टेक ।।
जगत जननि जग की विस्तारिणि,
नित्य सत्य साकेत विहारिणि,
परम दयामयि दीन उद्धारिणि,
मैया भक्तन हितकारी की ।। आरती ।।
सती शिरोमणि पति हित कारिणि,
पति सेवा हित वन वन चारिणि,
पति हित पति वियोग स्वीकारिणि,
त्याग धर्म मूरति धारी की ।। आरती ।।
विमल कीर्ति सब लोकन छाई,
नाम लेत पावन मति आई,
सुमिरत कटत कष्ट दुखदाई,
शरणागत जन भयहारी की ।। आरती ।।

विवरण

जो श्री राम जी की प्रिय पत्नी हैं तथा राजा जनक की लाड़ली पुत्री हैं ऐसी श्री सीता जी की हम आरती करते हैं । जो सारे संसार की माता हैं तथा पूरे संसार में जो विस्तृत हैं, जो हमेशा सच्चे मार्ग पर चलने वाली हैं तथा अपने सेवकों पर असीम स्नहे रखने वाली हैं एवं दु :खियों का दु:ख दूर करने वाली हैं, ऐसी सीता माँ हमेशा अपने सेवकों का भला करती हैं ।

जो सभी सतियों में श्रेष्ठ हैं तथा अपने पति (श्रीराम जी) का भला चाहने वाली हैं, जो अपनी पति की भलाई के लिए पति के विछोह को भी अपनाने वाली हैं, ऐसी त्याग धर्म की मूर्ति सीता जी की हम आरती करते हैं जिनका निर्मल यश पूरे जग में छाया हुआ है तथा जिनका नाम

मात्र लेने से ही हमारी बुद्धि पवित्र हो जाती है एवं जिनका भजन करने से हमारे सभी क्लेश दूर हो जाते हैं, ऐसी सीता माँ अपने सेवक़, शरणागतों के भय का नष्ट करने वाली हैं ।

उत्पति स्थिति (पालन) और संहार करने वाली, क्लेशों को हरने वाली तथा संपूर्ण कल्याणों को करने वाली श्री रामचन्द्र जी की प्रियतमा श्री सीताजी को मैं नमस्कार करता हूँ ।

---

visit www.astrogyan.com for more aarthi's, free indian astrology horoscope charts & predictions.
all information © since 2000, Aks Infotech Pvt. Ltd., portal designed & developed by Pintograph Pvt. Ltd.